केसरी कुमार

केसरी कुमार के जनम 7 फरवरी 1917 में पटना जिला के सैदनपुर गाँव में भेल। 1942 में ई पटना विस्वविद्यालय से एम.ए. कइलन । मगध विस्वविद्यालय (1974), पटना विस्वविद्यालय (1975) में हिन्दी के विभागाध्यक्ष पद के सुसोभित करित ई 1980 में सेवा से रिटायर भेलन। ई प्रपद्यवाद (नकेन) के सदस्य हलन । अब ई दुनिया में न हथ ।

केसरी कुमार मगही में आधुनिक कविता के सूत्रधार हलन। आस-पास के बिम्ब के माध्यम से ई साँझ के कई गो चित्र खिंचलन हे जेकरा में समकालीन जिनगी के यथार्थ सामने आ जा हे।

साँझ

न,
साँझ एक असभ्य अदमी के
जम्हाई हे,
जे भरल सभा में
आँख मीच ले हे,
नस सोझ करे-ला
नंगा बाँह के
तना अइसन उपरे उठा के
नीड़न के भुक्खल उद्ग्रीव
सावक अइसन अँगुरियन के
चटखावऽ हे—
टूट्-टूट !

न,
साँझ एगो सरीर लड़की हे
जे लिखल पन्ना के तितली उड़ावऽ हे
बादर-सैली में,
कलम के माथा से 'वुड कट' बनावऽ हे
आउ रन्ना से निकसल
लाल आँखन के देख
धुरिआयल फराक में मुँह लुका के
रोवे लगऽ हे

न,
साँझ
एक रद्दी सियाही-सोख हे
जे कार मूल पर लाल संसोधन के
आ लाल संसोधन पर कार मूल के
उल्टा लेवऽ हे काकपद समेत
आ समन्वय के द्वंद में
खुद बेकाम हो जा हे

न,
हम मरे के मनोदसा में
न
ही।

किरन होयत
अभी गोलार्द्ध पर
गिरिश्रृंग पर,
कंचनजंघा पर,

आसपास
पच्छिम पीछे
रामगिरि पर हस्तीव

न,
हम मरे के मनोदसा में
न ही ।

नाच शंकर
नाच कै—
लास पर

अभ्यास-प्रस्न

मौखिक :

1. (क) 'साँझ' के एगो असभ्य आदमी के जम्हाई काहे कहल गेल हे ?
   (ख) साँझ के लड़की काहे कहल गेल हे ?
   (ग) साँझ के रद्दी सियाही-सोख काहे बतावल गेल हे ?
   (घ) कवि के मनोदसा कइसन हे ?

लिखित :

1. साहित्य में मानवीकरण से का समझऽ हऽ ?
2. साँझ कविता में मानवीकरण कउन रूप में प्रस्तुत कैल गेल हे ?
3. साँझ कविता में केसरी कुमार के सिल्प-कला के बारें में लिखऽ ?
4. साँझ कविता में कवि साँझ के तुलना कउन-कउन चीज से कइलक हे ?

5. नीचे लिखल पंक्ति के आसय लिखऽ :—

साँझ एगो सरीर लड़की हे
जे लिखल पन्ना के तितली उड़ावऽ हे
बादर सैली में, कलम के माथा से
वुड-कट बनावऽ हे
आउ रन्ना से निकसल
लाल आँखन के देख
धुरिआयल फराक में मुँह लुका के रोवे लगऽ हे ।

6. ई कविता में जउन अलंकार, बिम्ब आउ प्रतीक योजना के परयोग कयल गेल हे, ओकरा से तू कहाँ तक सहमत हऽ ?

7. नीचे लिखल पंक्ति के व्याख्या करऽ :

'साँझ एक असभ्य अदमी के
जम्हाई हे जे भरल सभा में
आँख मीच ले हे'।

8. साँझ के बरनन जे कइल गेल हे ओकर अधार पर तोर मनोदसा पर का परभाव पड़ऽ हे ?

9. साँझ के बरनन में जउन-जउन तत्व के मदद लेल गेल हे, ओकरा में शृंगार रस के झलक कहाँ दिखाई पड़ऽ हे?

भासा-अध्ययन :

1. नीचे लिखल के समास विग्रह करऽ आउ समास के नाम बतावऽ:
धुरिआयल, काकपद, बेकाम, मनोदसा, आसपास, रामगिरि ।

योग्यता-विस्तार :

1. (क) अप्पन समझ से साँझ के एगो सुन्दर चित्र खिंचऽ ।

(ख) साँझ संबंधी दू कविता के संगरह करऽ ।

सब्दार्थ :

समन्वय	—	मिलल-जुलल
द्वन्द	—	संघर्स
संसोधन	—	सुधार
गिरीश्रृंग	—	पर्वत चोटी
मनोदसा	—	मन के स्थिति
नीड़न	—	घोंसला, खोंता
उडकट	—	लकड़ी से बनावल चित्र

●●●